# दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

**समय:** 45 मिनट

**दिनाँक:** 04-06-2026

## विषय सूची


दक्षिण-पश्चिमी मानसून

भारत की परिवर्तित औद्योगिक संरचना को प्रतिबिंबित करने वाली नई औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP) श्रृंखला है

वैश्विक स्टार्टअप हब के रूप में भारत का उदय

मध्यम वर्ग की विकास यात्रा : नीतियों द्वारा संचालित प्रगति

संक्षिप्त समाचार

*राष्ट्रीय पंचायत पुरस्कार 2025*

*ब्लू हेलमेट*

*नवाचार मंत्र पहल*

*₹10,000 करोड़ एटीएफ मूल्य स्थिरीकरण कोष*

*भारत में E85 ईंधन अपनाना*

*S-400 वायु रक्षा प्रणाली*

*लक्षद्वीप में नव-रिकॉर्डेड 'पोटैटो पैच' कोरल*

*काजीरंगा में प्रथम बार पीले-गले वाले मार्टेन की रिकॉर्डिंग*

*पद्मा बैराज*

## दक्षिण-पश्चिमी मानसून

संदर्भ

- भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (IMD) ने 4 जून 2026 को केरल में दक्षिण-पश्चिम मानसून के आगमन की पुष्टि की। यह भारत में वर्षा ऋतु की आधिकारिक शुरुआत को दर्शाता है।

### दक्षिण-पश्चिम मानसून

- **आगमन और वापसी**: भारत में मानसून का आगमन सामान्यतः जून के प्रारंभ में होता है और सितंबर तक रहता है।
    - मानसून की शुरुआत भारतीय महासागर से आने वाली आर्द्र वायु के आगमन से होती है।
    - मानसून की वापसी सामान्यतः अक्टूबर में होती है।
    - अक्टूबर से दिसंबर तक चलने वाला उत्तर-पूर्व मानसून दक्षिण भारत के कुछ हिस्सों में वर्षा लाता है।
- **मानसून की गतिशीलता**: एल नीनो और ला नीना जैसी घटनाएँ मानसून की शक्ति और वितरण को प्रभावित कर सकती हैं।
- **कृषि पर प्रभाव**: मानसून की सफलता सीधे फसल उत्पादन को प्रभावित करती है और इसके परिणामस्वरूप देश की अर्थव्यवस्था पर भी प्रभाव पड़ता है।

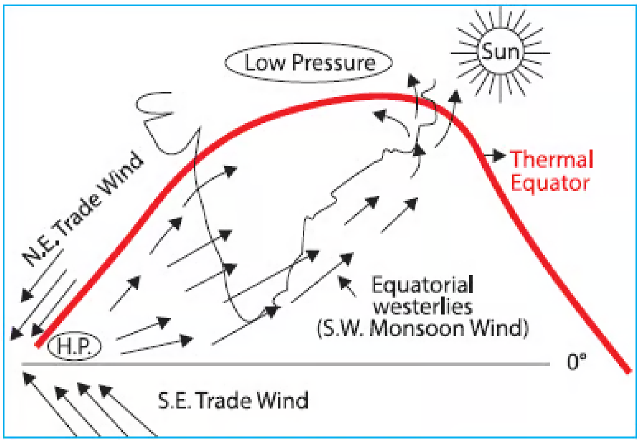


### एल नीनो क्या है

- "एल नीनो" का अर्थ स्पेनिश भाषा में "छोटा लड़का" है। यह एक जलवायु घटना है, जिसमें मध्य और पूर्वी भूमध्यरेखीय प्रशांत महासागर की सतह का तापमान समय-समय पर बढ़ जाता है।
    - एल नीनो के दौरान व्यापारिक हवाएँ कमजोर हो जाती हैं।
    - गर्म जल अमेरिका के पश्चिमी तट की ओर बढ़ता है और ठंडा जल एशिया की ओर प्रवाहित होने लगता है।

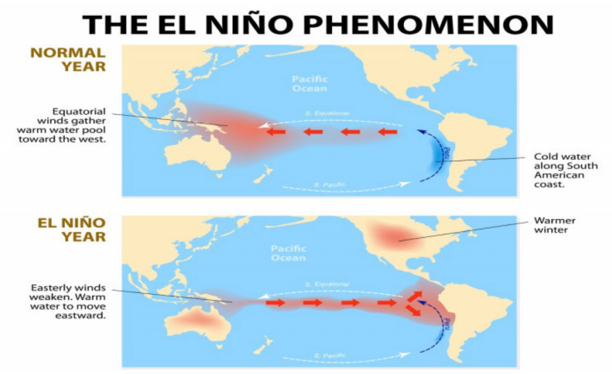


### एल नीनो का मौसम पर प्रभाव

- **वैश्विक तापमान वृद्धि**: एल नीनो वैश्विक तापमान में वृद्धि करता है, जिससे विश्वभर में सामान्य से अधिक उष्ण परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं।
- **भारतीय मानसून में व्यवधान**: भारत में एल नीनो सामान्यतः मानसून को कमजोर करता है, जिससे वर्षा कम होती है और सूखे की स्थिति बन सकती है।
- **जंगल की आग का खतरा**: एल नीनो ऑस्ट्रेलिया, दक्षिणी अफ्रीका और अमेरिका के कुछ हिस्सों में जंगल की आग की संभावना बढ़ा देता है।
- **चरम मौसम घटनाएँ**: एल नीनो तूफानों, हरिकेन और चक्रवातों जैसी चरम मौसम घटनाओं को तीव्र कर सकता है, विशेषकर प्रशांत एवं अटलांटिक महासागर में।

**स्रोत: TH**

## भारत की परिवर्तित औद्योगिक संरचना को प्रतिबिंबित करने वाली नई औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP) शृंखला

संदर्भ

- सांख्यिकी और कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय (MoSPI) ने 2022–23 को आधार वर्ष मानते हुए संशोधित अखिल भारतीय औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP) शृंखला जारी की है, जिसने पूर्ववर्ती 2011–12 शृंखला को प्रतिस्थापित किया।

- नई शृंखला के अंतर्गत प्रथम रिपोर्ट में अप्रैल 2026 में भारत के औद्योगिक उत्पादन में 4.9% की वृद्धि दर्ज की गई, जिसका नेतृत्व सुदृढ़ विनिर्माण गतिविधियों ने किया।

## आधार वर्ष संशोधन की आवश्यकता

- IIP औद्योगिक गतिविधि का एक प्रमुख अल्पकालिक संकेतक है, जिसका उपयोग सरकार, RBI और शोधकर्ता नीति निर्माण, पूर्वानुमान एवं राष्ट्रीय लेखा के लिए करते हैं।
- विगत IIP आधार वर्ष संशोधन 2011–12 में हुआ था। इसके पश्चात औद्योगिक उत्पादन में तकनीकी परिवर्तन, उत्पाद विविधीकरण और डिजिटलीकरण हुआ है।
    - भारत की आर्थिक संरचना परिवर्तित हुई है: सकल मूल्य वर्धन (GVA) में सेवाओं का योगदान 62.5%, कृषि का 15% और उद्योग का 22% है, जो विकास की संभावनाओं को दर्शाता है।
- MoSPI की TAC–IIP समिति ने 2022–23 को आधार वर्ष के रूप में अपनाने की सिफारिश की है ताकि संरचनात्मक और तकनीकी परिवर्तनों को बेहतर रूप से दर्शाया जा सके।
- संयुक्त राष्ट्र ने अनुशंसा की है कि सूचकांक संख्या का आधार काल प्रत्येक पाँच वर्ष में संशोधित किया जाना चाहिए।

### औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP)

- IIP अर्थव्यवस्था के विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रों में उत्पादन की मात्रा में परिवर्तन को मापता है।
    - यह औद्योगिक प्रदर्शन और समग्र आर्थिक गतिविधि का एक महत्वपूर्ण संकेतक है।
- **जारीकर्ता**: राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO), MoSPI
- **आवृत्ति**: मासिक आधार पर

## संशोधित IIP शृंखला की प्रमुख विशेषताएँ

- **विस्तारित क्षेत्रीय कवरेज**: प्रथम बार IIP ने पारंपरिक खनन, विनिर्माण और विद्युत क्षेत्रों से आगे बढ़कर गैस आपूर्ति, जल आपूर्ति, सीवरेज और अपशिष्ट प्रबंधन गतिविधियों को शामिल किया है।
- **अद्यतन उत्पाद टोकरी**: नई शृंखला में 1,042 उत्पादों को 463 समूहों में वर्गीकृत किया गया है, जबकि पूर्ववर्ती शृंखला में 839 उत्पाद और 407 समूह थे।
    - **नए उत्पाद:** CCTV कैमरे, विमान एवं अंतरिक्ष यान के पुर्ज़े, नॉन-वोवन वस्त्र, स्टेंट और टीके।
    - **प्रतिस्थापित किए गए उत्पाद:** मिट्टी का तेल, फ्लोरोसेंट ट्यूब और CFL।
- **संशोधित क्षेत्रीय वर्गीकरण**: खनन डेटा अब ईंधन खनिज, धात्विक खनिज (दुर्लभ पृथ्वी खनिज सहित) और अधात्विक खनिज (लघु खनिज सहित) के लिए अलग-अलग संकलित किया जाता है।
    - विद्युत उत्पादन को नवीकरणीय और गैर-नवीकरणीय स्रोतों के लिए पृथक-पृथक ट्रैक किया जाता है।
- **भारों का अद्यतन**: भार GVA अनुमानों और 2022–23 की औद्योगिक वार्षिक सर्वेक्षण से लिए गए हैं।
    - विद्युत के भार राजस्व हिस्सेदारी पर आधारित हैं, जबकि खनन भार खनिजों के योगदान को दर्शाते हैं।
- **NIC 2025 का समावेश**: नई शृंखला में NIC 2025 को शामिल किया गया है और गैर-प्रचालित कारखानों को प्रतिस्थापित करने का प्रावधान है।
- **लिंकिंग फैक्टर**: पुराने और नए शृंखला की तुलना हेतु MoSPI ने लिंकिंग फैक्टर जारी किए हैं:
    - **खनन और उत्खनन:** 1.1890
    - **विनिर्माण:** 1.3700
    - **विद्युत:** 1.8495
    - **सामान्य सूचकांक:** 1.3834
- **सुदृढ़ डेटा संग्रह ढाँचा**: चार नए डेटा स्रोत एजेंसियाँ जोड़ी गई हैं — IREL (इंडिया) लिमिटेड, राज्य आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, आवास एवं शहरी कार्य मंत्रालय, और पेयजल एवं स्वच्छता विभाग।

## संशोधित IIP शृंखला का महत्व

- नए क्षेत्रों और उत्पादों का समावेश औद्योगिक मापन को अधिक व्यापक बनाता है।
- संशोधित पद्धति औद्योगिक आँकड़ों की विश्वसनीयता और गुणवत्ता को बढ़ाती है।

- अद्यतन उत्पाद बास्केट तकनीकी प्रगति और उभरते उद्योगों को दर्शाती है।
- संशोधित शृंखला भारत के औद्योगिक आँकड़ों को अंतरराष्ट्रीय सर्वोत्तम प्रथाओं के अनुरूप बनाती है।
- पूँजीगत वस्तुओं का बेहतर मापन निवेश प्रवृत्तियों का आकलन सुदृढ़ करता है।

### निष्कर्ष

- नई IIP शृंखला भारत की आर्थिक संरचना और औद्योगिक परिदृश्य में हुए परिवर्तनों को दर्शाते हुए औद्योगिक वृद्धि का अधिक प्रतिनिधिक, विश्वसनीय और पद्धतिगत रूप से सुदृढ़ मापन प्रदान करती है।
- यह उभरते क्षेत्रों, तकनीकी प्रगति और बदलते उत्पादन पैटर्न को अधिक प्रभावी रूप से समाहित करती है, जिससे आर्थिक नीति निर्माण एवं औद्योगिक योजना के लिए साक्ष्य आधार सुदृढ़ होता है।

**स्रोत: DD News**

## वैश्विक स्टार्टअप हब के रूप में भारत का उदय

### संदर्भ

- 2016 में शुरू की गई **स्टार्टअप इंडिया पहल** ने भारत के उद्यमशील पारिस्थितिकी तंत्र को उल्लेखनीय रूप से रूपांतरित किया है। इसने नवाचार को प्रोत्साहित किया, वित्त तक पहुँच का विस्तार किया और एक सहायक नीतिगत वातावरण तैयार किया।

### भारत का स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र

- भारत विश्व का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र है (अमेरिका और चीन के बाद), जिसमें 120 से अधिक यूनिकॉर्न (मूल्य > $1 बिलियन) और 1,57,000 से अधिक सरकारी मान्यता प्राप्त स्टार्टअप शामिल हैं।
- यह पारिस्थितिकी तंत्र लगभग 12–15% वार्षिक दर से बढ़ रहा है, कुछ वर्षों में वृद्धि 30% तक रही।
- स्टार्टअप की संख्या 2016 में लगभग 10,000 से बढ़कर 2025 में लगभग 2.5 लाख हो गई।
- **प्रमुख क्षेत्र**: फिनटेक, ई-कॉमर्स, सप्लाई चेन और हेल्थ-टेक।
- **क्षेत्रीय केंद्र**: बेंगलुरु, मुंबई, हैदराबाद और दिल्ली-एनसीआर।
- **रोजगार सृजन का प्रमुख स्रोत:** स्टार्टअप्स ने 21 लाख से अधिक रोजगार सृजित किए हैं, जिससे वे रोजगार सृजन के महत्वपूर्ण माध्यम बन गए हैं।
- **वित्तपोषण परिदृश्य:** वर्ष 2025 में भारतीय स्टार्टअप्स ने लगभग 10–11 अरब अमेरिकी डॉलर का निवेश आकर्षित किया, जिससे भारत विश्व के सर्वाधिक वित्तपोषित स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्रों में अपनी स्थिति बनाए रखने में सफल रहा।

### स्टार्टअप के लिए पात्रता मानदंड

- **कंपनी की आयु:** स्थापना की तिथि से कंपनी के अस्तित्व और संचालन की अवधि 10 वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए।
- **कंपनी का स्वरूप:** कंपनी का पंजीकरण प्राइवेट लिमिटेड कंपनी, पंजीकृत साझेदारी फर्म अथवा लिमिटेड लाइबिलिटी पार्टनरशिप के रूप में होना चाहिए।
- **वार्षिक कारोबार:** स्थापना के पश्चात किसी भी वित्तीय वर्ष में कंपनी का वार्षिक कारोबार 100 करोड़ रुपये से अधिक नहीं होना चाहिए।
    - **डीप-टेक कंपनियाँ:** डीप-टेक कंपनियाँ 20 वर्षों तक स्टार्टअप की श्रेणी में बनी रह सकती हैं तथा उनका वार्षिक कारोबार 300 करोड़ रुपये तक हो सकता है।
- **मौलिक इकाई:** संस्था का गठन किसी पूर्व विद्यमान व्यवसाय के विभाजन अथवा पुनर्गठन के परिणामस्वरूप नहीं होना चाहिए।

### भारत के स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र में प्रमुख प्रवृत्तियाँ

- **भौगोलिक विविधीकरण:** वर्ष 2016 में नवस्थापित स्टार्टअप्स में लगभग 65 प्रतिशत हिस्सेदारी टियर-1 शहरों की थी, जबकि टियर-3 नगरों का योगदान मात्र 15 प्रतिशत था।
    - वर्ष 2025 तक यह प्रवृत्ति उलट गई। टियर-3 नगरों का योगदान बढ़कर लगभग 71 प्रतिशत हो गया, जबकि टियर-1 शहरों की हिस्सेदारी घटकर केवल 18 प्रतिशत रह गई।

NEXT IAS

- **जनसांख्यिकीय प्रवृत्तियाँ:** अधिकांश स्टार्टअप संस्थापकों की आयु 40 वर्ष से कम है।
    - लगभग 66 प्रतिशत पुरुष संस्थापक तथा 59 प्रतिशत महिला संस्थापक इसी आयु वर्ग से संबंधित हैं।
    - 30 वर्ष से कम आयु वर्ग के संस्थापकों में महिलाओं की हिस्सेदारी लगभग 21 प्रतिशत है, जबकि 50 वर्ष से अधिक आयु वर्ग में यह लगभग 33 प्रतिशत है।

### भारत के स्टार्टअप विकास के प्रमुख कारक

- **सरकारी समर्थन:** वर्ष 2016 में प्रारंभ की गई **स्टार्टअप इंडिया पहल** ने नीतिगत सहायता, कर प्रोत्साहन, नियामकीय सरलीकरण तथा स्टार्टअप मान्यता जैसी सुविधाएँ प्रदान कीं।
    - **फंड ऑफ फंड्स फॉर स्टार्टअप्स (₹10,000 करोड़)**
    - **स्टार्टअप इंडिया सीड फंड योजना**
    - **स्टार्टअप्स हेतु क्रेडिट गारंटी योजना (CGSS)**
    - इन योजनाओं ने वित्तीय संसाधनों तक पहुँच को सुदृढ़ बनाया।
- **डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना (DPI):** आधार, यूपीआई, डिजिलॉकर तथा ओएनडीसी जैसे मंचों ने लेन-देन लागत को कम किया तथा स्टार्टअप्स को तीव्र गति से विस्तार करने में सहायता प्रदान की।
    - डीपीआई ने फिनटेक, ई-कॉमर्स, लॉजिस्टिक्स, हेल्थ-टेक तथा अन्य डिजिटल क्षेत्रों के विकास को गति दी।
- **महानगरों से बाहर विस्तार: GENESIS (उद्यमिता और स्टार्टअप इकोसिस्टम का निर्माण)** जैसी पहलों के माध्यम से स्टार्टअप गतिविधियाँ टियर-II तथा टियर-III शहरों तक विस्तारित हुईं।
    - छोटे शहरों के स्टार्टअप्स ने कृषि-प्रौद्योगिकी, ग्रामीण वाणिज्य, पर्यटन तथा सेवा वितरण जैसी स्थानीय समस्याओं के समाधान पर ध्यान केंद्रित किया।
- **वेंचर एवं जोखिम पूंजी का विस्तार:** भारत में घरेलू तथा विदेशी वेंचर कैपिटल निवेश में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई, जिससे स्टार्टअप्स के लिए वित्तीय अवसरों का विस्तार हुआ।
- **युवाओं में उद्यमशीलता की बढ़ती आकांक्षा:** अधिकांश संस्थापकों की आयु 40 वर्ष से कम होने से यह स्पष्ट होता है कि युवाओं में उद्यमिता को करियर के रूप में अपनाने की प्रवृत्ति बढ़ी है तथा रोजगार खोजने की अपेक्षा रोजगार सृजन की सोच विकसित हुई है।

### भारत के स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र की चुनौतियाँ

- **वित्तीय बाधाएँ:** प्रारंभिक चरण के स्टार्टअप्स को प्रायः पर्याप्त पूंजी उपलब्ध नहीं हो पाती, जिससे भर्ती, विपणन तथा संचालन संबंधी गतिविधियाँ प्रभावित होती हैं।
- **बाजार की मांग का गलत आकलन:** स्टार्टअप विफलता का एक प्रमुख कारण वास्तविक बाजार आवश्यकता की पहचान न कर पाना है। लगभग 42 प्रतिशत स्टार्टअप्स मांग का सही आकलन न कर पाने के कारण असफल हो जाते हैं।
- **प्रतिभा को बनाए रखने की चुनौती:** स्थापित कंपनियों से प्रतिस्पर्धा के कारण स्टार्टअप्स को कुशल मानव संसाधन आकर्षित करने और उन्हें बनाए रखने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है।
- **कुछ क्षेत्रों में अत्यधिक एकाग्रता:** अधिकांश निवेश फिनटेक, ई-कॉमर्स तथा एडटेक क्षेत्रों में केंद्रित है, जबकि विनिर्माण, कृषि-प्रौद्योगिकी तथा डीप-टेक जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों को अपेक्षाकृत कम निवेश प्राप्त होता है।

### भारत के स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र को सुदृढ़ बनाने वाली योजनाएँ

| Scheme | Ministry | Objective |
|---|---|---|
| Atal Innovation Mission (AIM) (2016) | NITI Aayog | Foster nationwide innovation culture |
| GENESIS (Gen-Next Support for Innovative Startups) (2022) | Ministry of Electronics & IT (Meity) | Deep-tech startups in Tier II/III cities |
| Technology Incubation and Development of Entrepreneurs (TIDE) 2.0 (2019) | Ministry of Electronics & IT (Meity) | ICT startup incubation & scale-up |
| MeitY Startup Hub (MSH) (2016) | Ministry of Electronics & IT (Meity) | Integrate tech startup ecosystem |
| NIDHI (National Initiative for Developing and Harnessing Innovations) (2016) | Department of Science & Technology (DST) | Support S&T startups from idea to market |
| Startup Village Entrepreneurship Programme (SVEP) (2015) | Ministry of Rural Development (DAY- NRLM) | Promote rural entrepreneurship |
| ASPIRE (Scheme for Promotion of Innovation, Rural Industries and Entrepreneurship) (2015) | Ministry of MSME | Strengthen rural enterprise incubators |
| Prime Minister's Employment Generation Programme (PMEGP) (2008) | Ministry of MSME (KVIC) | Subsidised credit for self-employment |

### आगे की राह

- **'मूल्यांकन-आधारित' से 'मूल्य-सृजन आधारित' विकास की ओर:** केवल यूनिकॉर्न बनने की प्रतिस्पर्धा से आगे बढ़ते हुए, सतत एवं लाभप्रद व्यावसायिक मॉडल विकसित करने पर बल दिया जाना चाहिए।

- **डीप-टेक को प्राथमिकता:** कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), सेमीकंडक्टर, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी तथा जैव-प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों को आर्थिक एवं राष्ट्रीय सुरक्षा के दृष्टिकोण से रणनीतिक महत्व प्रदान किया जाना चाहिए।
- **विकेंद्रीकृत नवाचार क्लस्टर:** महानगर-केंद्रित विकास के स्थान पर क्लस्टर-आधारित नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र विकसित किए जाने चाहिए, जैसे—
  - ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि-प्रौद्योगिकी क्लस्टर,
  - औद्योगिक गलियारों में विनिर्माण क्लस्टर,
  - अनुसंधान संस्थानों के निकट डीप-टेक हब।

### निष्कर्ष

- 2016 से 2025 का दशक भारत में एक जीवंत और भौगोलिक रूप से विविध स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र के उद्भव का साक्षी रहा है।
- अनुकूल नीतियों, निवेशकों के बढ़ते विश्वास और व्यापक उद्यमशील भागीदारी से समर्थित, भारत ने स्वयं को विश्व के अग्रणी स्टार्टअप राष्ट्रों में स्थापित किया है और एक वैश्विक नवाचार हब के रूप में अपनी स्थिति को सुदृढ़ किया है।

**स्रोत: TH**

## मध्यम वर्ग की विकास यात्रा : नीतियों द्वारा संचालित प्रगति

### संदर्भ

- भारत का मध्यम वर्ग बढ़ती आय, विस्तारित अवसरों और सरकार द्वारा संचालित अनेक सुधारों के संयुक्त प्रभाव से एक महत्वपूर्ण परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है।

### मध्यम वर्ग कौन है?

- मध्यम वर्ग का निर्धारण क्रय-शक्ति, शिक्षा स्तर, सामाजिक सेवाओं तक पहुँच तथा समृद्धि की धारणा जैसे विभिन्न कारकों से होता है।
- विश्व बैंक द्वारा व्यापक रूप से प्रयुक्त एक मानक के अनुसार, देशों का वार्षिक वर्गीकरण **प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय (GNI)** के आधार पर किया जाता है, जो सभी क्षेत्रों की प्राथमिक आय के मूल्य को दर्शाता है।
- वित्त वर्ष 2026 (FY26) के लिए अमेरिकी डॉलर में अद्यतन देश-आय वर्गीकरण इस प्रकार हैं:
  - **निम्न आय :** ≤ $1,135
  - **निम्न-मध्यम आय :** $1,136 – $4,495
  - **उच्च-मध्यम आय :** $4,496 – $13,935
  - **उच्च आय :** > $13,935

### भारत में मध्यम वर्ग

- वर्ष 2010 में विश्व का अधिकांश मध्यम वर्ग OECD अर्थव्यवस्थाओं में संकेंद्रित था, किंतु यह स्थिति तीव्रता से बदल गई है।
- 2009 से 2017 के बीच वैश्विक मध्यम वर्ग की जनसंख्या 1.8 अरब से बढ़कर 3.5 अरब हो गई, जिसमें एशिया का योगदान लगभग 40% रहा।
- 2011 से 2019 के मध्य भारत की प्रति व्यक्ति GDP में 53% की वृद्धि हुई, जबकि 1995 से 2021 के दौरान देश का मध्यम वर्ग 6.3% की वार्षिक दर से विस्तारित हुआ।
  - वर्तमान में मध्यम वर्ग भारत की कुल जनसंख्या का लगभग 31% हिस्सा है।
- OECD के अनुमानों के अनुसार, 2030 से 2035 के बीच भारत मध्यम वर्ग की कुल संख्या के मामले में चीन को पीछे छोड़ सकता है।
- **विश्व आर्थिक मंच (WEF)** का अनुमान है कि 2036 तक भारत का मध्यम वर्ग और समृद्ध उपभोक्ता देश के कुल उपभोक्ता व्यय का 93% हिस्सा होंगे, जबकि 2026 में यह हिस्सा 80% है।
- WEF के अनुसार लगभग 500 नए "उपभोक्ता शहर" उभरेंगे तथा शहरी उपभोग वृद्धि का 93% हिस्सा देश के पाँच सबसे बड़े महानगरों के बाहर के क्षेत्रों से आएगा।

### भारत में बढ़ते मध्यम वर्ग का महत्व

- **आर्थिक विकास का प्रमुख इंजन:** घरेलू उपभोग को प्रोत्साहन देकर विभिन्न क्षेत्रों में वस्तुओं और सेवाओं की मांग में वृद्धि करता है।
- **कराधान आधार का विस्तार:** प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष करों के माध्यम से सरकारी राजस्व में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

NEXT IAS

- **मानव पूंजी विकास:** शिक्षा, स्वास्थ्य एवं कौशल विकास में निवेश कर कार्यबल की उत्पादकता को बढ़ाता है।
- **उद्यमिता एवं नवाचार को प्रोत्साहन :**निवेश और बाजार मांग के माध्यम से स्टार्टअप, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों (MSMEs) तथा तकनीकी नवाचार को समर्थन प्रदान करता है।
- **लोकतंत्र एवं सुशासन का सुदृढ़ीकरण:** अधिक पारदर्शिता, जवाबदेही और बेहतर सार्वजनिक सेवा वितरण की मांग करता है।
- **शहरीकरण एवं डिजिटलीकरण को गति प्रदान करना:** शहरों, डिजिटल भुगतान, ई-कॉमर्स और डिजिटल अर्थव्यवस्था के विकास को प्रोत्साहित करता है।
- **सामाजिक गतिशीलता एवं गरीबी उन्मूलन में सहायता:** ऊर्ध्वगामी सामाजिक गतिशीलता के अवसर सृजित करता है तथा आकांक्षी वर्ग का विस्तार कर समय के साथ गरीबी को कम करने में सहायता करता है।

### मध्यम वर्ग के समक्ष चुनौतियाँ

- **वेतन वृद्धि में ठहराव एवं रोजगार असुरक्षा:** संविदात्मक रोजगार, स्वचालन और उच्च गुणवत्ता वाले रोजगारों के सीमित सृजन के कारण रोजगार संबंधी अनिश्चितता बढ़ रही है।
- **जीवन-यापन की उच्च लागत:** आवास, स्वास्थ्य, शिक्षा और आवश्यक वस्तुओं में मुद्रास्फीति से उपलब्ध आय प्रभावित होती है।
- **कर भार:** मध्यम वर्ग प्रत्यक्ष करों का बड़ा हिस्सा वहन करता है, जबकि उसे अपेक्षाकृत सीमित कल्याणकारी लाभ प्राप्त होते हैं।
- **स्वास्थ्य एवं शिक्षा पर बढ़ता व्यय:** सार्वजनिक सेवाओं की सीमाओं के कारण निजी संस्थानों पर निर्भरता वित्तीय दबाव बढ़ाती है।
- **सीमित सामाजिक सुरक्षा:** अनेक मध्यम वर्गीय परिवारों के पास पर्याप्त पेंशन, बेरोजगारी लाभ और आय-सुरक्षा का अभाव है।
- **आवास की वहनीयता संबंधी समस्याएँ:** तीव्र शहरीकरण और बढ़ती रियल एस्टेट कीमतों के कारण, विशेषकर महानगरों में, घर खरीदना कठिन होता जा रहा है।
- **ऋण एवं वित्तीय संवेदनशीलता:** गृह, शिक्षा एवं व्यक्तिगत ऋणों पर बढ़ती निर्भरता परिवारों को आर्थिक आघातों और ब्याज दरों में उतार-चढ़ाव के प्रति अधिक संवेदनशील बनाती है।

### सरकारी समर्थन

- **कर सुधारों से उपलब्ध आय में वृद्धि:** 2023 में लागू नई कर व्यवस्था तथा **आयकर अधिनियम, 2025** के अंतर्गत किए गए सुधारों के परिणामस्वरूप ₹12 लाख तक की वार्षिक आय वाले व्यक्तियों को आयकर नहीं देना पड़ता।
- **GST से कर भार में कमी:** वस्तु एवं सेवा कर (GST) ने कई आवश्यक वस्तुओं पर कर भार कम किया है, अनुपालन को सरल बनाया है तथा वहनीयता में सुधार किया है।
- **पेंशन, बीमा एवं बैंकिंग सहायता को सुदृढ़ता:** भारत प्रीमियम मात्रा के आधार पर विश्व का 10वाँ सबसे बड़ा बीमा बाजार बन चुका है।
  - घरेलू निवेशों में बीमा एवं पेंशन निधियों का हिस्सा FY19 के 28.6% से बढ़कर FY25 में 29.6% हो गया।
- **कम ब्याज दरों से वहनीयता में सुधार:** 2015 में 9.5% से 10.5% के बीच रहने वाली ब्याज दरें 2025 तक घटकर लगभग 7.35% से 8.75% के बीच आ गईं।
  - व्यक्तिगत ऋणों की ब्याज दर 2014 के 14.25% से घटकर 2026 में 12.5% हो गई, जबकि शिक्षा ऋणों की दर 14.25% से घटकर 9.4% रह गई।
- **मुद्रा ऋण से उद्यमिता को प्रोत्साहन :** 2015 में प्रारंभ की गई **प्रधानमंत्री मुद्रा योजना (PMMY)** छोटे व्यवसायों के लिए बिना जमानत वित्तपोषण का एक प्रमुख स्रोत बनकर उभरी है।

- **बुनियादी सुविधाओं तक पहुँच में उल्लेखनीय सुधार:** नल जल कनेक्शनों की संख्या 2019 में 3.23 करोड़ से बढ़कर मई 2026 तक 15.85 करोड़ हो गई है।
- **अधिक घरों तक विश्वसनीय विद्युत आपूर्ति:** भारत में ऊर्जा की कमी FY14 के 4.2% से घटकर FY26 में मात्र 0.03% रह गई है।
- **स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र द्वारा रोजगार सृजन:** भारत का स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र अत्यधिक विस्तार कर चुका है।
    - मान्यता प्राप्त स्टार्टअप्स की संख्या 2016 में मात्र 502 से बढ़कर मार्च 2026 तक 2.23 लाख से अधिक हो गई।
    - इन स्टार्टअप्स ने लगभग 23.3 लाख प्रत्यक्ष रोजगार सृजित किए हैं।
    - मान्यता प्राप्त स्टार्टअप्स में से लगभग 48% में कम-से-कम एक महिला निदेशक या साझेदार है।

### निष्कर्ष

- विगत वर्षों में कराधान, सामाजिक सुरक्षा, आवास, स्वास्थ्य, शिक्षा, अवसंरचना तथा डिजिटल प्रशासन जैसे विभिन्न क्षेत्रों में किए गए सुधारों ने भारत के मध्यम वर्ग के जीवन स्तर को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
- बढ़ती आय और विस्तारित अवसरों के साथ यह वर्ग उपभोग, उद्यमिता और आर्थिक विकास की एक प्रमुख शक्ति के रूप में उभर रहा है तथा वर्ष 2047 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने के लक्ष्य में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

**स्रोत: PIB**

# संक्षिप्त समाचार

## राष्ट्रीय पंचायत पुरस्कार 2025

### संदर्भ

- पंचायती राज मंत्रालय ने राष्ट्रीय पंचायत पुरस्कार (NPA) 2025 के विजेताओं की घोषणा की है, जिसमें पूरे भारत से 42 पंचायतों को सम्मानित किया गया।

### राष्ट्रीय पंचायत पुरस्कार

- **परिचय**: यह पुरस्कार पंचायती राज मंत्रालय द्वारा उच्च प्रदर्शन करने वाली पंचायतों को पहचान और प्रोत्साहन देने हेतु प्रदान किया जाता है।
- **उद्देश्य**: स्थानीय स्वशासन संस्थाओं को प्रतिस्पर्धी संघवाद के माध्यम से सुशासन और सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) की प्राप्ति हेतु प्रेरित करना।
- **क्रियान्वयन ढाँचा**: पुरस्कार "पंचायतों का प्रोत्साहन (IoP)" योजना के अंतर्गत दिए जाते हैं, जो राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान (RGSA) का एक घटक है।
- **वित्तीय प्रोत्साहन**: विजेता पंचायतों को ₹50 लाख से ₹5 करोड़ तक की वित्तीय सहायता दी जाती है।
- **राज्यवार प्रदर्शन**: कर्नाटक ने सर्वाधिक 6 पुरस्कार प्राप्त किए, इसके बाद आंध्र प्रदेश और ओडिशा ने 5-5 पुरस्कार हासिल किए।

### पुरस्कार की श्रेणियाँ

- **दीनदयाल उपाध्याय पंचायत सतत विकास पुरस्कार (DDUPSVP)**: ग्राम पंचायतों को LSDGs के नौ विषयों पर प्रदर्शन के आधार पर सम्मानित किया जाता है।
- **नानाजी देशमुख सर्वोत्तम पंचायत सतत विकास पुरस्कार (NDSPSVP)**: सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली पंचायतों को जिला, ब्लॉक और ग्राम स्तर पर प्रदान किया जाता है।

**स्रोत: PIB**

## ब्लू हेलमेट

### संदर्भ

- दक्षिण सूडान में UN मिशन (UNMISS) के तहत सेवा कर रहे 565 भारतीय ब्लू हेलमेट्स को UN मेडल ऑफ ऑनर से सम्मानित किया गया।

### ब्लू हेलमेट

- ये सैन्यकर्मी, पुलिस अधिकारी और नागरिक विशेषज्ञ होते हैं, जो संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना अभियानों में कार्यरत रहते हैं।

- **मान्यता प्राप्त कार्य**:
    - नागरिकों की सुरक्षा हेतु गश्त,
    - सामुदायिक सहभागिता,
    - पशु चिकित्सा शिविर,
    - महिलाओं के आत्मरक्षा प्रशिक्षण,
    - लैंगिक हिंसा से मुकाबला,
    - मानवीय पहुँच में सुधार।
- **भारत का योगदान**:
    - नेपाल के बाद भारत UN शांति अभियानों में दूसरा सबसे बड़ा योगदानकर्ता है।
    - वर्तमान में भारत 4,200 से अधिक सैन्य और पुलिसकर्मी भेज रहा है, जिनमें 155 महिलाएँ शामिल हैं।
    - अब तक लगभग 180 भारतीय शांति सैनिकों ने ड्यूटी के दौरान प्राणों की आहुति दी है, जो सभी देशों में सर्वाधिक है।

**स्रोत: TOI**

## नवाचार मंत्र पहल

### समाचार में

- नवाचार मंत्र पहल का शुभारंभ केंद्रीय मंत्री द्वारा IIT दिल्ली में किया गया।

### नवाचार मंत्र पहल

- यह राष्ट्रीय कार्यक्रम कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय (MSDE) द्वारा शुरू किया गया है और NIESBUD के माध्यम से लागू किया जा रहा है।
- इसका उद्देश्य टियर-2, टियर-3 और ग्रामीण भारत से उत्पन्न नवाचारों की पहचान, मार्गदर्शन एवं विस्तार करना है।

### मुख्य विशेषताएँ

- **लक्षित जनसंख्या**: 18 से 55 वर्ष आयु के भारतीय नागरिक, विशेषकर आकांक्षी जिलों और ग्रामीण/अर्ध-शहरी क्षेत्रों से।
- **पात्रता**: विचार मान्यता या प्रारंभिक प्रोटोटाइप चरण में होना चाहिए; पंजीकृत कंपनी या तैयार उत्पाद आवश्यक नहीं।
- **प्राथमिक क्षेत्र**: एग्रीटेक, हेल्थटेक एवं वेलनेस, एडटेक, जलवायु कार्रवाई, ग्रामीण वाणिज्य और MSME सशक्तिकरण।
- **सहायता तंत्र**: चयनित प्रतिभागियों को 1-वर्षीय इनक्यूबेशन चक्र मिलता है, जिसमें मार्गदर्शन, नियामक अनुपालन, बौद्धिक संपदा संरचना और वित्त पोषण रोडमैप शामिल हैं।

**स्रोत:** DD News

## ₹10,000 करोड़ एटीएफ मूल्य स्थिरीकरण कोष

### संदर्भ

- केंद्रीय मंत्रिमंडल ने तेल विपणन कंपनियों (OMCs) को विमानन टरबाइन ईंधन (ATF) मूल्य स्थिरीकरण सहायता प्रदान करने हेतु अनुसूचित भारतीय एयरलाइनों के लिए ₹10,000 करोड़ तक की एकमुश्त बजटीय सहायता को स्वीकृति दी है।

### परिचय

- पश्चिम एशिया संकट के कारण वैश्विक कच्चे तेल एवं जेट ईंधन की कीमतों में तीव्र वृद्धि हुई है।
- ATF, एयरलाइनों की परिचालन लागत का लगभग 35–40% हिस्सा होता है, जिससे एयरलाइंस ईंधन मूल्य में उतार-चढ़ाव के प्रति अत्यधिक संवेदनशील हो जाती हैं।
- इस योजना का उद्देश्य असाधारण वैश्विक ईंधन बाजार अस्थिरता की अवधि में विमानन ईंधन की कीमतों में अधिक पूर्वानुमेयता और स्थिरता सुनिश्चित करना है।
- यह योजना भारतीय एयरलाइनों के घरेलू एवं अंतरराष्ट्रीय दोनों परिचालनों को शामिल करती है।

**स्रोत: AIR**

## भारत में E85 ईंधन अपनाना

### संदर्भ

- केंद्र सरकार भारत में E85 ईंधन के किफायती अपनाने के लिए एक नीति ढाँचा तैयार करने पर विचार कर रही है।

### E85 ईंधन क्या है?

- E85 एक ईंधन मिश्रण है जिसमें 85% इथेनॉल और 15% पेट्रोल शामिल होता है।
- इसका उपयोग विशेष रूप से डिजाइन किए गए फ्लेक्स-फ्यूल वाहनों (FFVs) में किया जा सकता है, जो विभिन्न इथेनॉल-पेट्रोल मिश्रणों पर कार्य करने में सक्षम होते हैं।
- इन वाहनों में संशोधित इंजन एवं ईंधन प्रणाली होती है, जो विभिन्न ईंधन संरचनाओं के अनुसार स्वचालित रूप से समायोजित हो जाती है।

### भारत में E85 को प्रोत्साहन दिए जाने का कारण

- **ऊर्जा सुरक्षा में वृद्धि:** इथेनॉल का अधिक उपयोग भारत की कच्चे तेल के आयात पर निर्भरता को कम कर सकता है।
- **आयात बिल में कमी:** यदि 2026–27 इथेनॉल आपूर्ति वर्ष के दौरान पेट्रोल वाहन बिक्री का केवल 1% हिस्सा E85 में परिवर्तित होता है, तो भारत लगभग ₹195 करोड़ विदेशी मुद्रा की बचत कर सकता है।
  - इससे कच्चे तेल के आयात में लगभग 0.28 लाख मीट्रिक टन (LMT) की कमी हो सकती है।
- **कृषक एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था को समर्थन:** E85 के बढ़ते उपयोग से 4 करोड़ लीटर से अधिक इथेनॉल की मांग उत्पन्न हो सकती है।
  - लगभग ₹266 करोड़ इथेनॉल डिस्टिलर्स को भुगतान किए जाने का अनुमान है।
  - लगभग ₹160 करोड़ सीधे किसानों को इथेनॉल फीडस्टॉक (जैसे गन्ना एवं मक्का) की बढ़ती मांग के माध्यम से प्राप्त हो सकते हैं।
- **पर्यावरणीय लाभ:** अनुमानित स्तर पर E85 के उपयोग से लगभग 0.86 लाख मीट्रिक टन $CO_2$ उत्सर्जन में शुद्ध कमी हो सकती है।

### इथेनॉल क्या है?

- इथेनॉल 99.9% शुद्ध अल्कोहल है जिसे पेट्रोल के साथ मिश्रित किया जा सकता है। इसका उत्पादन उच्च स्टार्च सामग्री वाले गन्ना, मक्का, गेहूँ आदि से किया जा सकता है।
- अल्कोहल का उत्पादन यीस्ट द्वारा शर्करा के किण्वन के माध्यम से होता है। गन्ने के रस या मोलासेस में शर्करा सुक्रोज के रूप में होती है, जो ग्लूकोज और फ्रक्टोज में विखंडित होती है।
- अनाजों में स्टार्च होता है, जिसे पहले शर्करा में परिवर्तित किया जाता है, उसके पश्चात किण्वन, आसवन एवं निर्जलीकरण की प्रक्रियाओं के माध्यम से इथेनॉल प्राप्त किया जाता है।

### इथेनॉल मिश्रण

- इथेनॉल मिश्रण का अर्थ पेट्रोल के साथ इथेनॉल को मिलाकर एक ऐसा ईंधन तैयार करना है, जिसका उपयोग आंतरिक दहन इंजनों में किया जा सके।
- मुख्य मिश्रण इस प्रकार हैं:
  - **E10:** 10% इथेनॉल और 90% पेट्रोल का मिश्रण, जो व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।
  - **E15:** 15% इथेनॉल और 85% पेट्रोल का मिश्रण।
  - **E85:** 85% इथेनॉल और 15% पेट्रोल का उच्च इथेनॉल मिश्रण, जिसका उपयोग फ्लेक्स-फ्यूल वाहनों में किया जाता है।

**स्रोत: TH**

## S-400 वायु रक्षा प्रणाली

### समाचार में

- भारत को रूस निर्मित S-400 वायु रक्षा प्रणाली का चौथा स्क्वाड्रन प्राप्त हुआ है, जिससे देश की लंबी दूरी की वायु रक्षा क्षमताएँ और अधिक सुदृढ़ हुई हैं।

### परिचय

- यह आपूर्ति वर्ष 2018 में भारत और रूस के बीच हस्ताक्षरित 5.43 अरब डॉलर के समझौते का भाग है, जिसके अंतर्गत पाँच S-400 रेजिमेंटल प्रणालियों की खरीद की जानी है।
- मूल अनुबंध के अंतर्गत पाँचवाँ एवं अंतिम स्क्वाड्रन वर्ष 2027 तक प्राप्त होने की संभावना है।

**S-400 के बारे में**

- भारतीय सेवा में इसे "सुदर्शन चक्र" के नाम से भी जाना जाता है।
- यह विश्व की सबसे उन्नत वायु रक्षा प्रणालियों में से एक है।
- यह एक साथ कई लक्ष्यों को ट्रैक एवं नष्ट करने में सक्षम है, जिनमें लड़ाकू विमान, बैलिस्टिक मिसाइलें, क्रूज़ मिसाइलें, ड्रोन एवं हवाई निगरानी प्लेटफॉर्म शामिल हैं।
- इसकी मारक क्षमता 400 किमी तक तथा ऊँचाई क्षमता 30 किमी तक है।
- यह भारत की बहु-स्तरीय वायु रक्षा संरचना का एक महत्वपूर्ण घटक है, जो पश्चिमी एवं उत्तरी सीमाओं पर तैनात है।
- यह आकाश (Akash) और MRSAM जैसी प्रणालियों के साथ मिलकर बहु-स्तरीय सुरक्षा कवच प्रदान करता है।

**क्या आप जानते हैं?**

- S-400 ने ऑपरेशन सिंदूर (2025) के दौरान शत्रु के हवाई खतरों को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- इसके प्रदर्शन के बाद सरकार ने पाँच अतिरिक्त S-400 स्क्वाड्रन की खरीद को स्वीकृति दी, जिससे भारत की प्रस्तावित कुल संख्या पाँच से बढ़कर दस स्क्वाड्रन हो जाएगी।

**स्रोत: TH**

## लक्षद्वीप में नव-रिकॉर्डेड 'पोटैटो पैच' कोरल

**संदर्भ**

- लक्षद्वीप के कदमत द्वीप के दक्षिण-पूर्वी भाग में विशाल 'पोटैटो कोरल' पैच (कोरल कॉलोनी) की खोज/रिकॉर्ड दर्ज की गई है।

**कोरल क्या हैं?**

- कोरल अकशेरुकी जीव हैं, जो निडेरिया (Cnidaria) नामक बड़े जीव समूह से संबंधित होते हैं।
  - कोरल का निर्माण छोटे, नरम जीवों जिन्हें पॉलीप्स कहा जाता है, के समूह से होता है।
  - ये अपने चारों ओर सुरक्षा हेतु कैल्शियम कार्बोनेट का चूना-पत्थर जैसा कठोर बाह्य कंकाल स्रावित करते हैं।
  - अतः कोरल रीफ लाखों सूक्ष्म पॉलीप्स द्वारा निर्मित विशाल कार्बोनेट संरचनाएँ होती हैं।
- **आकृति:** कोरल लाल से लेकर बैंगनी और नीले रंग तक पाए जाते हैं, लेकिन सामान्यतः ये भूरे और हरे रंग के शेड्स में अधिक दिखाई देते हैं।
  - कोरल रंगीन इसलिए दिखाई देते हैं क्योंकि इनके अंदर ज़ूज़ैन्थेली (zooxanthellae) नामक सूक्ष्म शैवाल पाए जाते हैं।
- **कोरल रीफ के प्रकार:** तीन प्रकार के कोरल रीफ होते हैं— फ्रिंजिंग रीफ, बैरियर रीफ और एटोल।
  - फ्रिंजिंग रीफ तटरेखा के साथ बनते हैं, बैरियर रीफ खुले समुद्री जल में विकसित होते हैं, और एटोल गोलाकार रीफ होते हैं जो डूबे हुए ज्वालामुखियों के चारों ओर बनते हैं।
- **भारत में कोरल रीफ क्षेत्र:** कच्छ की खाड़ी, मन्नार की खाड़ी, अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह, लक्षद्वीप द्वीप समूह तथा मालवन।
- **महत्व:** कोरल रीफ समुद्री जैव विविधता के अत्यंत महत्वपूर्ण केंद्र हैं। ये लगभग एक-चौथाई समुद्री जीवों को भोजन, आश्रय, विश्राम एवं प्रजनन स्थल प्रदान करते हैं तथा नर्सरी व संरक्षण स्थल के रूप में कार्य करते हैं।
  - ये वैश्विक स्तर पर 1 अरब से अधिक तटीय जनसंख्या को भोजन, आजीविका और मनोरंजन के माध्यम से समर्थन प्रदान करते हैं।

**कोरल ब्लिचिंग**

- कोरल ब्लिचिंग तब होती है जब कोरल अपने ऊतकों में रहने वाले रंगीन सहजीवी शैवाल (zooxanthellae) को बाहर निकाल देते हैं।
- इसके कारण कोरल फीके पड़ जाते हैं और भूख तथा रोगों के प्रति संवेदनशील हो जाते हैं।
- ब्लिच हुए कोरल तुरंत मरते नहीं हैं, लेकिन उनके पुनर्जीवन के लिए समुद्री तापमान का सामान्य/ठंडा होना आवश्यक होता है।

**स्रोत: DTE**

## काजीरंगा में प्रथम बार पीले-गले वाले मार्टेन की रिकॉर्डिंग

संदर्भ

- काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान में प्रथम बार पीले-गले वाले मार्टेन की उपस्थिति की पुष्टि की गई है।

### पीले-गले वाले मार्टेन के बारे में

- **वैज्ञानिक नाम:** मार्टेस फ्लेविगुला।
- यह मस्टेलिडे परिवार से संबंधित है, जिसमें ऊदबिलाव, बिज्जू और वूल्वरिन जैसे जीव शामिल होते हैं।
- यह खाद्य शृंखला में अपेक्षाकृत छोटा मांसाहारी है, जो शीर्ष शिकारी (जैसे बाघ और भालू) के नीचे स्थित होता है।
- यह दिन में सक्रिय और वृक्षों पर चढ़ने वाला मस्टेलिड है, जो बीजों के प्रसार में सहायता करता है तथा वन पुनर्जनन एवं पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने में भूमिका निभाता है।

- यह हिमालय, दक्षिण एशिया, दक्षिण-पूर्व एशिया, चीन, कोरिया और रूस के कुछ भागों में पाया जाता है।
- भारत में यह हिमालयी क्षेत्र तथा पूर्वोत्तर भारत, विशेषकर असम में पाया जाता है।
- **IUCN स्थिति:** कम चिंताजनक।
  - यह भारत के वन्यजीव संरक्षण अधिनियम के अंतर्गत अनुसूची II में संरक्षित है।

### काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान के बारे में

- यह भारत के उत्तर-पूर्वी राज्य असम में स्थित है।
- इसे 1908 में आरक्षित वन के रूप में स्थापित किया गया था और 1974 में राष्ट्रीय उद्यान घोषित किया गया।
- इसे 1985 में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल का दर्जा प्राप्त हुआ।
- यह भारतीय गैंडे (राइनोसिरोस यूनिकॉर्निस) का सबसे बड़ा आवास स्थल है।

**स्रोत: TH**

## पद्मा बैराज

संदर्भ

- बांग्लादेश ने पद्मा नदी पर एक बड़े नदी इंजीनियरिंग प्रोजेक्ट—पद्मा बैराज—को स्वकृति दी है, जो राजबाड़ी जिले में स्थित है।

परिचय

- यह परियोजना बांग्लादेश के दक्षिण-पश्चिमी क्षेत्र की जल-प्रणाली को आंशिक रूप से पुनर्गठित करने का प्रयास है, जो लंबे समय से मौसमी जल प्रवाह में कमी के कारण सूखे की स्थिति का सामना कर रहा है।
- इस बैराज की लंबाई 2.1 किलोमीटर होगी तथा इसमें 78 स्पिलवे गेट, अंडर-स्लूइस, नेविगेशन लॉक, मछली मार्ग और संबंधित तटबंध शामिल होंगे।
- बांग्लादेश के अनुसार, यह परियोजना देश के लगभग 37% भूभाग को प्रभावित करेगी तथा लगभग 2.88 मिलियन हेक्टेयर कृषि भूमि की सिंचाई में सहायक होगी।

### पद्मा नदी के बारे में

- पद्मा नदी बांग्लादेश की सबसे महत्वपूर्ण नदियों में से एक है।
- यह गंगा नदी की प्रमुख वितरिका है, जब गंगा भारत से निकलकर बांग्लादेश में प्रवेश करती है।
- पद्मा दक्षिण-पूर्व दिशा में प्रवाहित हुए जमुना (निम्न ब्रह्मपुत्र) नदी से मिलती है और आगे मेघना नदी में मिलकर बंगाल की खाड़ी में गिरती है।
- यह विश्व के सबसे बड़े डेल्टा तंत्र—गंगा-ब्रह्मपुत्र-मेघना डेल्टा—का एक प्रमुख हिस्सा है।

**स्रोत: TH**

NEXT IAS